उत्तराखण्ड की जौनसारी जनजाति की महिलाओं का संस्कृति और परम्परा के संरक्षण में योगदान

अंकिता टम्टा*

उत्तराखण्ड जिसे देवभूमि के नाम से सम्बोधित किया गया है जो भौगोलिक और पर्यावरणीय विविधताओं को अपने अंदर समाए हुए अपनी अद्भुत संस्कृति और परम्परा के लिए सम्पूर्ण भारत में विख्यात है साथ ही साथ इसकी संस्कृति और परम्परा को विख्यात बनाने में यहाँ निवास करने वाले जनजातीय समुदायों का भी विशेष योगदान है जो उत्तराखण्ड राज्य के भिन्न भिन्न स्थानो में निवास करती है। इस जनजातीय समुदाय की अपनी एक अलग संस्कृति और परम्परा है।

उत्तराखण्ड में मुख्य रूप से 5 जनजातीय समुदाय निवास करते है जो थारू, जौनसारी, बुक्सा, शौका (भोटिया) और राजी है। इस शोध पत्र में राज्य का दूसरा सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय जौनसारी है। जिसमें जौनसारी महिलाओं की संस्कृति और परम्परा के संरक्षण में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

वर्तमान में जौनसारी महिलाओं की सामाजिक स्थिति तथा उनके द्वारा अपनी संस्कृति और परम्परा के संरक्षण में सहभागिता जो जौनसारी समाज की पहचान हैं। जिसे ये पीढ़ियो से अपने आने वाली पीढ़ियो को हस्तान्तरित कर रही है। इस परम्परा संस्कृति को आज भी जौनसारी समाज में देखा जा सकता है, जिसे इस शोध पत्र में दर्शाया गया है।

परिस्थितियो में परिवर्तन के फलस्वरूप जौनसारी समाज में काफी अधिक परिवर्तन आए है। जौनसारी महिलाएँ अपने क्षेत्र की संस्कृति और परम्परा की वाहक है। इसलिए उनके लिए ऐसे साधनों का विकास करना चाहिए। जिससे वह अपने क्षेत्रो में रहकर वहाँ का विकास कर सकें और अपनी परम्परागत संस्कृति को जिसे जौनसारी महिलाओ ने खान–पान, वेशभूषा, उत्सव, मेले, त्यौहार, नृत्य, आभषूणों के माध्यम से संरक्षित किया है और वह इसके लिये वे सलंग्नता से कार्य करे। महिलाओं को संस्कृति और परम्परा को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो उत्तराखण्ड की संस्कृति की एक अलग पहचान बना सके।

उद्देश्य

1– वर्तमान में जौनसारी महिलाओं का परम्परा संस्कृति संरक्षण में योगदान को दर्शाना।
2– जौनसारी समाज में जनजातीय महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना।
3– जनजाति महिलाओं के लिये गये साक्षात्कारो के माध्यम से आँकड़ें एकत्रित कर जौनसारी परम्परा संस्कृति पर प्रकाश डालना।
4–वर्तमान में जौनसारी समाज में प्रचलित पारम्परिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों, मेलों का विवरण देना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन की सुविधा हेतु वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसका प्रयोग स्थिति तथा जनसंख्या बताने के लिये जो स्पष्ट योजना से सम्बन्धित है

वर्णनात्मक शोध पद्धति के नाम से जाना जाता है। वर्णनात्मक शोध पद्धति की 3 श्रेणियाँ है :–

(1) अवलोकन करना (2) मामले का अध्ययन (3) सर्वेक्षण

जिसमें शोध पत्र लेखन हेतु वर्णनात्मक शोध पद्धति की 3 श्रेणी सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया है। जिसके माध्यम से जनजातीय क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर प्रश्नावली अनुसूची के माध्यम से जनजातीय महिलाओं का साक्षात्कार लिया गया हैं। जिससे वर्तमान की जौनसारी महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

*शोध छात्रा इतिहास विभाग डी०एस०बी० कैम्पस, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल

उत्तराखण्ड राज्य जिसे मानसखण्ड में देवभूमि कहा गया है, जो अपने अन्दर भिन्न–भिन्न संस्कृतियों और परम्पराओं को लिए हुए है। यही संस्कृति और परम्परा उत्तराखण्ड में निवास करने वाली जनजातियों की भी है। जिसका अपना एक विशेष महत्त्व है।

जनजाति शब्द जैसे ही हमारे मस्तिष्क में आता है वैसे ही एक ऐसे मानव जातिय समूह का चित्र हमारे सामने उभरता है। जो जंगली, पहाड़ी, पठारी समुद्र तटीय, मरूस्थल एवं द्वीपों समूहों में निवास करता है। जिनका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक संगठन बिल्कुल अलग होता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जनजाति वह मानव जातिय समूह है। जिसका शिल्प शास्त्र सरल होता है। जिनकी अर्थव्यवस्था अस्तित्व की ओर अभिमुख होती है। यह समूह अशिक्षित होता है तथा अस्तित्व के लिए प्रकृति के साथ संघर्ष करता है।[1]

उत्तराखण्ड में मुख्य रूप से थारू, जौनसारी, बुक्सा, शौका (भोटिया) एवं राजी आदि जनजातियाँ निवास करती है। जिन्हें 1967 में संविधान की धारा 342 के अंर्तगत 5 जनजातियों को भारत के राष्ट्रपति द्वारा अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया। 5 जनजातियों में से सर्वाधिक जनसंख्या वाली 2 जनजातियाँ (प) थारु (पप) जौनसारी जबकि सबसे कम जनसंख्या वाली जनजाति राजी है।[2]

इन जनजातियों में जौनसारी जनजाति की सामाजिक स्थिति तथा उनकी परम्पराएँ संस्कृति, लोक नृत्य, उत्सव, मेले, एवं स्थानीय देवता, खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा का वर्गीकरण किया गया है।

अपनी पौराणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पम्पराओं के वाहक जौनसारी देश की चुनिंदा जनजातियों में अपना विशेष स्थान रखती है, जौनसारी राज्य का दूसरा सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय होने के साथ–साथ इस जनजाति की विशेषता यह भी है कि इस जनजाति में महिलाओं का विशेष स्थान है। देहरादून के कालसी, विकासनगर, चकराता से लगी हिमालय की पहाड़ियों में युगो से रहती है।[3]

इस हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र के उत्तर पूर्व में उत्तरकाशी तथा टिहरी जिले आते है। तथा पश्चिमी सीमा में टोंस नदी के पार हिमांचल प्रदेश का क्षेत्र आता है। 1193 वर्गमील क्षेत्र में जौनसारी सभ्यता व संस्कृति फैली हुई है। हिन्दू धर्म की धार्मिक मान्यताओं के अनुयायी जौनसारी जनजाति के रीति–रिवाज यू तो आम हिन्दू समाज की भाँति है, किन्तु भौगोलिक विषमताओं के कारण इनके रीति–रिवाजों में भिन्नता पायी गई है।

जौनसारी भावर की सामाजिक संरचना निराली है। जौनसारी समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित है। परिवार के सभी सदस्यो के कार्य जैसे– जानवरों को चराना, कृषि, भोजन पकाने हेतु ईधन जुटाना आदि घरेलू कार्य सब आपस में बंटे होते है। इन समस्त कार्यो में सबसे अधिक महिलाओं की सहभागिता होती है। जौनसारी समाज में महिलाओं का स्थान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। जौनसारी समाज की कई परम्पराएँ व्यवहारिक जीवन प्रणाली पाण्डव काल में प्रचलित कई कथाओं से मिलती है। जो इस जनजाति के वैदिक आर्यो पाण्डवों से निकटता को प्रमाणित करती है।[4]

जौनसारी समाज में महिलाओं की स्थिति को देखते हुये समाज में उनका क्या स्थान है अतः जौनसारी समाज पुरूष प्रधान होने के कारण महिलाओ की स्थिति पुरूषों से कमतर है। सामाजिक स्तर पर भी कुछ ऐसे बंधन है, जो आज के परिदृश्य में समझना कठिन है। उदाहरण के लिए परिवार में निर्णय लेने में तो उनकी भागीदारी ही नहीं है। उन्हें खेतों व गॉवों की मीटिगों में जानें की इजाजत ही नहीं है चाहे वह विषय महिलाओं से सम्बन्धित ही क्यो न हो लेकिन महिलाओं को विशेष अवसरों पर सम्मान भी दिया जाता है।[5]

जौनसारी समाज में महिलाओ के दो स्तर है–

(1) रईण (2) ध्याण

इन दोनो ही स्तरों के आधार पर जौनसार में महिलाओं को आदर और सम्मान दिया जाता है। यही प्रथा वर्तमान में भी प्रचलित है।

(1) **रईण** :– विवाहिता को रईण कहा जाता है, उसका गॉव में बड़ा मान सम्मान होता है वह चाहे किसी जाति या कबीलें की हो, उसकी ओर कोई बुरी नजर से नही देखता है। महिला भी अपनी गरिमा का ध्यान रखती है।

(2) **ध्याण** :– गॉव की लड़की को ध्याण कहा जाता है। जिसे अपने मायके में पुरी तरह स्वतंत्रता होती है।[6]

यहाँ की महिलाएँ परिश्रमी, ईमानदार व धर्मभीरू है। जौनसारी कृषि की रीढ़ है फिर भी पारिवारिक निर्णय लेने में भी उनकी भागीदारी व स्थिति कमजोर है, लेकिन इसके साथ ही कुछ उज्ज्वल पक्ष भी है यहाँ पर्दा प्रथा बिल्कुल भी नही है। यहाँ की महिलाओं को विसंगत एवं नापसंद विवाह से छुटकारा लेना भी आसान है। यह महिलाएँ समाज का आधार है और अपने प्रत्येक कार्यो से समाज को नई दिशा प्रदान करती है।

जौनसारी क्षेत्र में लोगों का खान–पान, रहन–सहन सरल है। ये लोग सीढ़ीनुमा खेतो में फसलों का उत्पादन करते है। जिसमें जौनसारी महिलाओं का अपना विशेष योगदान है। महिलाएँ खेती व घर का कार्य सक्रिय रूप से करती है। ये लोग धान, मटर, मक्का, ज्वार, गेहूँ, चना, जौ आदि का सेवन करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति मॉस का सेवन करता है। गर्भवती महिलाओं के लिए विशेष प्रकार का भोजन 'खिड़ा' तैयार किया जाता है। इसके सेवन से महिलाओं को ऊर्जा प्राप्त होती है। विशेष अवसर पर कई प्रकार के व्यंजनो को परोसा जाता है। विवाह समारोह में बरातियों का स्वागत बूरे के साथ घी परोसकर किया जाता है तथा मदिरा भी दी जाती है।[7]

जौनसारी भावर की महिलाओं की पोशाको में प्रमुख है– 'गहरे लाल काले रंग का घेरेदार कुर्ती, बीच में तंग व नीचे ऊपर ढीली, कमर का थेसर, पीछे बॉधनें की तनियॉ, घाघरा, चोली (कुर्ती) झगा और ढॉटू (सिर का आच्छादक वस्त्र) काले कपड़े के ढॉटू पर कढाई करके किनारो पर झालर लगायी जाती है। घाघरे पर भी फाल लगायी जाती है जिसे 'लांवण' कहा जाता है तथा इसके ऊपर बारीक सफेद रंग की कोर लगती है, किन्तु अब नये फैशन के रुप में 'लाऊण' के स्थान पर अंदर से अस्तर व बाहर से एक फुट के फासले पर डेढ़ इंच चौड़ा रंग–बिरंगा फीता लगता है।[8]

जौनसार में गहनो का क्रम हाथों से आरम्भ होता है, उंगलियों में सोने या चाँदी की अंगुठी पहनते है, जिसे 'छाप' कहते है। बाजुओं में चूड़ियाँ तथा कड़े को आमतौर पर कागुंठे कहते है, कहीं–कहीं धागुले' भी कहते है। नाक में लौंग जिसे 'फुल्ली' कहते है, 'बुलाक' नाक का अति प्राचीन और पारम्परिक गहना है कान में तुंगल अथवा मुरकिया पहननें का रिवाज है तथा कानों की ऊपरी तह में सोने की बालीनुमा उतराइयां पहनी जाती है। सर्वाधिक गहने गले में पहने जाते है गले में पट्टेनुमा माला जिसे काडुडी कहते है इसे महिलायें हर समय ही पहने रहती है एक अन्य पारम्परिक हार है 'दोसरू' इसमें दस लड़ियाँ होती है। दूसरा गहना 'खगाइली' है, यह चॉदी की ठोस गोलाकार आकृति का हारनुमा गहना है। गले में पहना जाने वाला अन्य आभूषण 'कंठा' है यह भी 'खगाइली' की तरह बड़ें आकार का जेवर है। 'सूच' महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला मनपसंद आभूषण है। 'सूच' के दानों ओर चौड़ी पट्टीदार चेन नीचे हुबहू पान के पत्ते के आकार का चौडा पैंडल लटका रहता है। जौनसारी महिलाएँ पैरों की उंगलियों में बिछुए पहनती है इन्हे 'पोली' या 'पालियाँ' कहते है।[9]

जौनसारी समाज की महिलाएँ आज भी इन्ही परम्परागत आभूषणों व पोशाक को धारण करती है। जिससे यह ज्ञात होता है कि जौनसारी भावर क्षेत्र महिलाओं ने इन विभिन्न आभूषणों को धारण कर इस क्षेत्र की परम्परा को संरक्षित करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जो आने वाली पीढ़ी को यह सभी आभूषण धारण करने के लिए प्रेरित करती रहेगी।[10]

इस क्षेत्र में धार्मिक आस्था तथा ईश्वर के प्रति स्थानीय देवी देवताओं का बाहुल्य है। जौनसार भावर धार्मिक परम्पराओं की पहचान के लिए प्रसिद्ध है। महाभारत काल से जुड़ा यह क्षेत्र पांडवो की कर्मभूमि रहा है। यहॉ के लोग स्वयं को पांडव वंशज मानते हैं। महासू देवता यहाँ के अराध्य देव है तथा शैव कोणाक मतों का वंशज मानते है। इस क्षेत्र में अनेक स्थानीय देवी देवताओं वांशिक, महासू, बोठा महासू, पवासी एवं चालदा महासू को अपना कुल देवता तथा संरक्षक मानते है। इनमें से पवासी महासू के अतिरिक्त शेष तीनों की उपासना स्थल इसी जनजाति क्षेत्र में है। सनातन धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले इस क्षेत्र के लोग हिमाचल जनपद शिमला की तहसील चौपाल में स्थित ''बीजट महाराज'', चूड़ धार स्थित ''शिरगुल'' की उपासना भी करते हैं।[11]

संगीत जौनसार भावर जनजाति के लोगों के जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। सभी पर्वो, अनुष्ठानो, संस्कारों, मेले तथा समस्त त्यौहारों के अवसर पर यहाँ के वाद्ययंत्र अपना मधुर संगीत बिखेरते हैं। इनके द्वारा प्रयोग किये जाने वाले वाद्य यंत्रो में जिसमें से विगाई (शहनाई), खंजरी, चिमटा, करताला, कांसे की थाली, मंजीरा, हुड़का, ढोलक, नगाड़ा, ढोल–दमाऊ, तुरी, बॉसुरी, रणसिंहा आदि प्रमुख है। पांडव नृत्य जौनसार भावर जनजाति का प्रमुख नृत्य है। यहाँ के प्रत्येक गॉव में पांडव चौरा है। जहाँ पांडव पूजा की जाती है तथा पूजा के समय ही पांडव नृत्य का आयोजन किया जाता है। यह नृत्य उनकी धार्मिक आस्था पर आधारित है। इस नृत्य में युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव तथा कुंती आदि पात्र होते हैं।[12] इसके अतिरिक्त जैता, रासों, जंगबाजी, ठोणे, तांदी, हारुल नृत्य बड़े

ही धूमधाम से मनाये जाते है। देवी देवताओ के नाम पर आयोजित किये जाने वाले मेलो में महासू महाराज का 'जागड़ा' या 'जागरण' (भादौं माह), दशहरा (पाइंता) यह दशमी के दिन मनाया जाता है, 'नुणाई' यह भेड़ों का प्रसिद्ध मेला है, लेकिन अब वर्तमान में इसका प्रचलन कम हो चुका है। पाँचो काली माता के नाम से मनाया जाता है। 'जात्रा' का मेला यह धार्मिक मेला है और यह कहीं–कहीं मनाया जाता है स्थानीय देवता को समर्पित होता है।

जौनसार भावर में मनाये जाने वाले त्यौहार में दीवाली जो वर्तमान दीवाली के एक माह बाद मनायी जाती है, दीवाली को स्थानीय भाषा में 'दीयाई' कहा जाता है। 'मोरोज' (माघ त्यौहार) यह त्यौहार पूस संक्राति के दिन शुरु होता है। उस दिन जौनसार भावर में बकरे काटे जाते हैं। बिस्सू का त्यौहार 13 से 16 अप्रैल तक मनाया जाता है। यह बैशाखी के शुभ पर्व पर होता है। 'गोगाड़' (गोगा नवमी) यह त्यौहार भादो महीनें में कृष्ण जन्माष्टमी के दूसरे दिन मनाया जाता है।

जौनसारी भावर क्षेत्र में प्रमुख नृत्यों में महिलाओं की सहभागिता अधिक देखने को मिलती है। महिलाओं की यही सहभागिता उनकी संस्कृति और परम्परा संरक्षण में उनकी विशेष भूमिका को उजागृत करती है, जिससे जौनसारी समाज में महिलाओं की महत्ता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।[13]

संदर्भ–ग्रन्थ

1. पाण्डेय गया, भारतीय जनजातिय संस्कृति, कॉनसेप्ट पब्लिकेशन, पेज नं0–2
2. त्रिपाठी केसरी नन्दन, परीक्षावाणी(बौद्धिक प्रकाशन), चर्तुथ संस्करण, 2011–12पेज नं0 208
3. कंडारी दीपक, जनपक्ष आजकल, प्रकाशक– जोशी गिरीश, जनवरी 2011 पेज नं0 34
4. नेगी गिरधर जोशी व जोशी मंजुल, मध्य हिमालय जौनसारी भावर आँचल कल और आज, मल्लिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पेज नं0– 47ए 48ए 66ए 67
5. शाह टीकाराम, जौनसार भावर ऐतिहासिक सन्दर्भः समाज संस्कृति और इतिहास, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, उत्तराखण्ड, पेज नं0–395
6. साक्षात्कार– कृपाराम जोशी, गॉव– थाणा (चकराता) दिनांक–2/3/2017
7. मिश्र प्रभा, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, पेज नं0–88
8. शर्मा डी0डी0, उत्तराखण्ड का लोकजीवन एवं संस्कृति, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी, ब109
9. जौनसारी रतनसिंह, जौनसार भावर एक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन, गीतांजली प्रकाशन, देहरादून, पेज नं0–48,49,50
10. मिश्र प्रभा, उपर्युक्त पेज नं0–86,87
11. राणा जे0 पी0, जौनसार भावर दर्शन, सरस्वती प्रेस, देहरादून, 2004 पेज0नं0–66,67
12. चौहान विद्यासिंह, भारत की जनजातियां, ट्रांस मीडिया प्रकाशन, श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड, पेज0नं0 – 193,194
13. साक्षात्कार – सुमित्रा राणा चौहान, गॉव–माक्टी (चकराता), दिनांक–28/2/17